SAURASHTRA UNIVERSITY
P.G.T.R. Section, Main office,
First Floor, University Road,
Rajkot - 360 005(Gujarat)
Phone No. : 2578501
Fax:(0281)2586983
www.saurashtrauniversity.edu
Accredited Grade'A' by NAAC

તા.૧૦ ૦૮ ૧૬

ક્રમાંક/ પી.જી.ટી.આર./પ/૨૯૬૬/૨૦૧૬

પ્રતિ,
નિયામકશ્રી,
કોમ્પ્યુટર સેન્ટર
સૌરાષ્ટ્ર યુનિવર્સિટી,
રાજકોટ

વિષય : **Annual Decision Making/Teaching Case Study Competition-2016**

સંદર્ભ: (૧) ભારતીય લોક પ્રશાસન સંસ્થાન, ન્યુ દિલ્હી નો પત્ર આવેલ છે.
(૨) આ વિભાગની તા ૧૪ ૦૭ ૨૦૧૬ ની નોંધ માં પ્રાપ્ત કુલસચિવશ્રીના આદેશ

સવિનય ઉપરોક્ત વિષય અને સંદર્ભ સંદર્ભ ૧ અન્વયે **Entries are invited for the Annual Essay Prize Competition -2016. Thevalue of the prize for the competition will be as under:**

| | |
|---|---|
| **First Prize** | **Rs. 10,000/-** |
| **Second Prize** | **Rs.7,000/-** |
| **Third Prize** | **Rs.5,000/-** |

સંદર્ભ ૨ માં પ્રાપ્ત આદેશાનુસાર ભારતીય લોક પ્રશાસન સંસ્થાન, ન્યુ દિલ્હી નો પત્ર યુનિવર્સિટી ની વેબસાઈટ ઉપર સરક્યુલર માં પ્રસિધ્ધ કરવા વિનંતી.

બિડાણ : સંદર્ભ ૧ નો પત્ર

10-8-16
મદદનીશકુલસચિવ

O/C
7
8/8/16

નકલ રવાના:
(૧) કુલસચિવશ્રીના અંગત સચિવશ્રી

સૌરાષ્ટ્ર યુનિવર્સિટી
અનુસ્નાતક શિક્ષણ અને સંશોધન વિભાગ
21 JUN 2016
2859

21 JUN 2016
7381
સૌરાષ્ટ્ર યુનિવર્સિટી, રાજકોટ.

दूरभाष: 23468300
फैक्स: 23702440
Directoriipa9gmail.com

भारतीय लोक प्रशासन संस्थान
इंद्रप्रस्थ एस्टेट, रिंग रोड,
नई दिल्ली

## वार्षिक निबंध पुरस्कार प्रतियोगिता–2016

REGISTRAR
INWARD DATE
2016
8462
Sau. Uni. Rajkot

वार्षिक निबंध पुरस्कार प्रतियोगिता–2016 के लिए प्रविष्टियाँ आमंत्रित हैं। प्रतियोगिता के अंतर्गत पुरस्कार राशि निम्नवत् है:

प्रथम पुरस्कार: 10,000 /– रुपये

द्वितीय पुरस्कार: 7,000 /– रुपये

तृतीय पुरस्कार: 5,000 /– रुपये

जिस प्रतियोगी को इस प्रतियोगिता में एक बार पुरस्कार प्राप्त हो चुका है, वह प्रतियोगी दुबारा उसी श्रेणी या उससे निम्न श्रेणी के किसी पुरस्कार का हकदार नहीं होगा। निबंधों के संयुक्त लेखन की अनुमति नहीं दी जाएगी तथा संयुक्त रूप से लेखकों द्वारा लिखित किसी भी निबंध पर प्रतियोगिता के अंतर्गत विचार नहीं किया जाएगा।

प्रतियोगिता के विषय हैं–

- विकेंद्रीकरण तथा सार्वजनिक सेवा वितरण
- सितंबर 2015 में संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा अपनाए गए सतत् विकास लक्ष्य (एस डी जीज़)
- कृषि संकट

निबंध लेखकों से अपनी प्रविष्टियों में निम्नलिखित पहलुओं को शामिल करना अपेक्षित है:

विषय (1) : विकेंद्रीकरण तथा सार्वजनिक सेवा वितरण

भली प्रकार से डिज़ाइन किया गया तथा क्रियान्वित विकेंद्रीकरण, वितरण पद्धति तथा प्रकरण हेतु सेवाओं और अधिमानताओं की स्थानीय प्राथमिकताओं को अधिक सही से प्रतिबिंबित करके स्थानीय समुदायों की सेवा वितरण आवश्यकताओं को प्रभावी ढंग से संबोधित कर सकता है। भारत में प्रशासनिक विकेंद्रीकरण का डिज़ाइन 'तीन एफज़' फंड्स, फंक्शनज़ तथा फंक्शनरीज़––पर टिका हुआ है। विकेद्रीकरण के भारत के अनुभव को हम असंतुलित के रूप में चिन्हित कर सकते हैं, जिसमें राजनीतिक विकेंद्रीकरण(पंचायत चुनाव) प्रशासनिक विकेंद्रीकरण से आगे दौड़ रहा है। कार्य सौंप दिए गए हैं किंतु पंचायती राज संस्थाओं का निधि (जो पंचायती राज संस्थाओं के साथ विशिष्ट मद के लिए बंधे होते हैं) अथवा कार्यकर्त्ताओं (जो राज्य सरकारों के उपांग बनकर रह जाते हैं) पर नियंत्रण बहुत कम है। इस सीमित तथा असंतुलित विकेंद्रीकरण से सेवाओं में अर्थपूर्ण सुधार संभव नहीं है क्योंकि यह पद्धति की उत्तरदायिता के प्रत्यायोजन, वित्त, सूचना तथा लागू करने वाले तत्वों में सुधार नहीं करता––और कुछ मामलों में उन्हें कमजोर कर सकता है।

भारतीय संविधान के 73वें तथा 74वें संशोधन विकेंद्रीकरण के लिए कानून ढाँचा उपलब्ध कराते हैं। संशोधन में अधिदिष्ट किया गया है कि राज्य सरकारें कुछ शक्तियाँ तथा अधिकार शहरी स्थानीय निकायों को और कुछ ग्रामीण स्तर पर पंचायतों को अंतरित करें, ताकि वे स्वशासन की स्वायत्तशासी संस्थाओं के रूप में कार्य कर सकें। संशोधनों में इन स्थानीय निकायों में नियमित चुनाव कराने तथा महिलाओं हेतु एक–तिहाई सीटें और

अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजातियों हेतु जनसंख्या के अनुपात में सीटें आरक्षित कराने का प्रावधान भी किया गया है। अधिकांश राज्यों में चुनाव हुए है, जिसके परिणामस्वरूप तीन मिलियन से ज्यादा लोग औपचारिक राजनीतिक पद्धति में समाविष्ट हो गए हैं। तथापि, कुछ राज्य, स्थानीय सरकारों को निधि, कार्य तथा कार्यकर्त्ता हस्तांतरित करने हेतु राजनीतिक विकेंद्रीकरण से कहीं आगे आ गए हैं।

अच्छी प्रकार से डिज़ाइन की हुई विकेंद्रीकरण पद्धति के लिए अपेक्षित है कि कार्य बजट पद्धति के अनुरूप स्पष्टतया व्यक्तिगत गतिविधियों को सौंप दिए जाएँ, कार्यों के लिए वित्त उपलब्ध हो, अक्षछी प्रकार से डिज़ाइन किए हुए मॉनीटरन तथा मूल्याँकन तंत्र के माध्यम से कार्यनिष्पादन को जाँचा जाए तथा सूचना का प्रवाह नागरिकों तक हो, तथा नागरिक, नीति--निर्माताओं तथा नीति–निर्माताओं और प्रावधानकताओं दोनों पर जवाबदेही डाल सकते हैं।

पंचायतीराज संस्थाओं के माध्यम से विकेंद्रीकरण की शक्ति इस तथ्य में निहित है कि वे निम्नतम स्तर पर स्थापित प्रतिनिधि संस्थाएँ हैं। तथापि प्रभावी चेक तथा संतुलन के अभाव में ये संस्थाएँ अभिजात वर्ग द्वारा अधिकृत, राजनीतिक बहिष्कार तथा भ्रष्टाचार के प्रति संवेदनशील हैं। प्रयोक्ता समूह का दृष्टिकारण लाभकारी है क्योंकि यह निर्धनों को सीधे लक्ष्यकर स्थानीय स्तर पर निर्णय लेने की समावेशी प्रक्रिया को प्रोत्साहित करता है।

**विषय (2) : सितंबर 2015 में संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा अपनाए गए सतत् विकास लक्ष्य (एस डी जीज़)**

एस डी जीज की संकल्पना का उद्‌भव 2012 में सतत् विकास पर संयुक्त राष्ट्र सम्मलेन, रियो+20 में हुआ। इसका उद्‌देश्य था सतत विकास के तीन आयामों–पर्यावरणीय, सामाजिक तथा आर्थिक––को संतुलित करने के लिए सार्वभौमिक रूप से लागू करने हेतु लक्ष्य निर्धारित करना। सतत विकास लक्ष्य (एस डी जीज़), सहस्राब्दि विकास लक्ष्यों को प्रतिस्थापित करते हैं––जिन्होंने सितंबर 2000 में, निर्धनता का समाधान कराने के लिए 15 वर्षीय सामान्य कार्यसूची हेतु विश्व को एकत्रित किया। सितंबर 2015 में हुए ऐतिहासिक संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन में विश्व नेताओं द्वारा अपनाए गए 2030 एजेंडा के 17 सतत विकास लक्ष्य 1 जनवरी, 2016 को अधिकारिक रूप से अस्तित्व में आए। अगले 15 वर्षों में, सभी पर सार्वजनिक रूप से लागू इन नए लक्ष्यों के साथ, सभी प्रकार की निर्धनता समाप्त करने, असमानताओं से लड़ने तथा जलवायु परिवर्तन का मुकाबला करने के लिए सभी देश मिलकर प्रयास करेंगे तथा सुनिश्चित करेंगे कि कोई भी छूटे नहीं।

सतत विकास लक्ष्यों (एस डी जीज़) का निर्माण सहस्राब्दि विकास लक्ष्यों की सफलता पर किया गया है तथा इनका उद्‌देश्य है आगे सभी प्रकार की निर्धनता को समाप्त करना। ये नए लक्ष्य इस मामले में अनूठे हैं कि इनमें सभी देशों–चाहे वे निर्धन हों, समृद्ध हों अथवा मध्यम आय वाले हों––से ग्रह की रक्षा करते हुए समृद्धि प्रोन्नत करने का आवाहन किया गया है। यद्वपि सतत विकास लक्ष्य कानूनी रूप से बाध्यकारी नहीं हैं, किंतु सरकारों से अपेक्षा है कि वे अपनी ओर से इन सत्रह लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए राष्ट्रीय ढाँचा तैयार

करें। देशों का यह प्राथमिक उत्तरदायित्व है कि वे इन लक्ष्यों के कार्यान्वयन में हुई प्रगति का पुनरीक्षण करें, जिसके लिए गुणवत्ता, पहुँच तथा समय पर आँकड़े एकत्रित करना अपेक्षित होगा। क्षेत्रीय जाँच तथा पुनरीक्षण राष्ट्र–स्तरीय विश्लेषण पर आधारित होगा तथा यह विश्व स्तर पर जाँच तथा पुनरीक्षण में योगदान देगा।

इस संदर्भ में, निबंध को आला क्षेत्र पर बल देना चाहिए तथा इसे निम्न विशिष्ट मुद्दों का समाधान सुगम कराना चाहिए, जैसे: सतत विकास लक्ष्यों के संदर्भ में भारत की कार्ययोजना की रूपरेखा, जलवायु परिवर्तन तथा पर्यावरण पर कार्यवाही हेतु विश्व लक्ष्यों की प्राप्ति में भारत की रणनीति, स्वास्थ्य तथा शिक्षा तक बेहतर पहुँच। राष्ट्रीय विकास योनाओं तथा नीतियों में नवीन वैश्विक कार्यसूचनी प्रतिबिंबित करने के लिए सरकार को क्या समर्थन दिया जाना चाहिए? वित्तीय संसाधनों की चुनौतियाँ, वैश्विक विकास चुनौतियों का मुकाबला कैसे करेंगी? फ्रेम किए हुए सतत विकास लक्ष्यों हेतु राष्ट्रीय संकेतक क्या होंगे? संबंधित मुद्दों पर नीति निर्धारित करने के लिए विद्यमान आँकड़े कितने पर्याप्त तथा विश्वसनीय हैं? वर्तमान संदर्भ में, सतत विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने में राष्ट्र के रूप में हमारे सामने क्या चुनौतियाँ हैं?

निबंध की विषय–वस्तु चयन तथा प्रस्तुतीकरण मौलिक तथा सृजनात्मक होना चाहिए। विचार संप्रेषण में स्पष्टता तथा प्रभावकारिता निबंधों का एक अभिन्न अंग होना चाहिए ।

विषय (3) : कृषि संकट

वर्तमान समय में भारत में गहराया कृषि संकटः कृषि, आर्थिक, तकनीकी, पर्यावरणीय तथा पारिस्थितिक–इन संकट श्रृंखलाओं का एक संग्रह है। कृषि संकट के रूप में यह, तेजी से बढ़ते हुए छोटे भूखंडों, जो उपउत्पाद कृषि का निर्वाह करने में भी असमर्थ है, की अव्यवहार्यता प्रतिबिंबित करता है। आर्थिक संकट के रूप में, यह 1991 से त्वरित हुए नवउदारवादी आर्थिक सुधारों से कृषि को बुरी तरह प्रभावित करने वाले वृहत् तथा सूक्ष्म तत्वों की ओर ध्यान आकृष्ट करता है। तकनीकी संकट के रूप में यह केन्द्र तथा राज्य सरकारों के बीच आनुवांशिक रूप से संशोधित बीजों के प्रयोग के मुद्दे के इर्दगिर्द नीतिगत दुविधा तथा अस्थिर एवं अंतहीन वाद–विवाद को सूचित करता है पर्यावरणीय संकट के रूप में यह इस तथ्य का संकेत करता है कि रसायनिक उर्वरकों के अत्याधिक प्रयोग तथा बहुविध खेती ने भूमि को अत्याधिक खारा, सख्त, मिट्टी कार्बनिक कार्बन की कमी वाला, थका हुआ, पतला तथा कीट नियंत्रण प्रतिरोधी बना दिया है। पारिस्थितिक संकट के रूप में, यह जीववैविध्य की कमी, कृषि में प्रयुक्त रसायनों के भूमिजल में रिसाव तथा इसके दुषित होने और जल संग्रहण पद्धति के अभाव में भूमिगत जल के सूख जाने और सतह के नीच चले जाने से प्रयोग के लिए जो जल पहले 40 से 50 फीट से निकालना पड़ता था वह अब 300 से 400 फीट की गहराई से निकालना पड़ता है और यह सब अंततः भूमंडलीय उष्मा में परिवर्तित होकर जलवायु परिवर्तन द्वारा धरती पर विभिन्न प्रजातियों के लिए खतरा पैदा करता है। उदाहरणार्थ विश्व की अनेक संपन्न

प्राचीन कृषि तथा शहरी सभ्यताएँ वनों के अभाव तथा ग्लेशियरों के नष्ट हो जाने से बहकर नष्ट हो गईं।

भारत में उपनिवेशवाद का युग जल्दी–जल्दी पढ़नेवाले अकाल से संतप्त था। इसका मुकाबला करने के लिए उपायस्वरूप रॉयल दुर्भिक्ष आयोग की नियुक्ति की गई। उपनिवेशी राज्य प्राथमिक रूप से उद्धृत साधन थे तथा केवलमात्र आकस्मिक रूप से अपने राज्यसंबंधी हितों को आगे बढ़ाने के प्रति विकासशील थे। 1900–1947 के बीच खाद्य उत्पादन की विकास दर मात्र 0.1 प्रतिशत थी। स्वातंत्र्योत्तर भारत की प्रमुख उपलब्धियाँ थीं––हरित क्रांति तथा श्वेत क्रांति। वार्षिक खाद्यान्न उत्पादन की विकास दर 1950–2012 तक 3.2 प्रतिशत थी। यह कोई बड़ी बात नहीं है, किंतु भारत आयात से आगे बढ़कर मात्र आत्मनिर्भर ही नहीं हुआ अपितु एक निर्यातक भी बन गया।

इस शताब्दी में कृषि विकास की गति धीमी रही तथा वस्तुतः इसमें गिरावट आई। किंतु ऐसा एक ही रात में नहीं हुआ। कृषि विकास में तीव्र गिरावट 1950–51/1964–65 के दौरान 3.3 प्रतिशत तथा 1994–95/2004–2005 के दौरान मात्र 0.6 प्रतिशत आँकड़ों से प्रत्यक्ष होती हैं। इसके परिणामस्वरूप कृषि क्षेत्र में रहने वाले 40 प्रतिशत लोग विकल्प उपलब्ध होने पर खेती छोड़ना चाहते हैं। देश के बड़े भागों में किसानों द्वारा आत्महत्या की बढ़ती हुई दुःखद घटनाएँ और भी अधिक दुःखद हैं। इसका कारण आर्थिक उदारीकरण के परिणामस्वरूप 'आयात' में प्रतिस्पर्धा बढ़ जाने के कारण तथा ऋण के असहनीय बोझ को माना गया है। भारतीय समाजवाद से व्यापार उदारीकरण में नीतिगत परिवर्तन के

साथ–साथ अर्थव्यवस्था के कृषि तथा शहरी क्षेत्रों के बीच बढ़ती हुई आर्थिक भिन्नताओं और सामान्यतः वर्गीय तथा क्षेत्रीय भिन्नताओं से भी जुड़ा हुआ है।

कृषि संकट का बारीकी से परीक्षण किया जाना चाहिए। जैसा ए0 वैद्यनाथ ने उपयुक्त ही टिप्पणी की है कि खेतों में होने वाली आत्महत्याएँ हर स्थान पर नहीं हो रही है और आर्थिक संकेतकों में इसका कारण समान रूप से गहन बताया गया है। '2002 में, देश के ग्रामीण परिवारों के 30 प्रतिशत से भी कम परिवारों पर ऋण बकाया था और यह उनकी परिसंपत्तियों के कुल मूल्य का 2–3 प्रतिशत मात्र था। जिन राज्यों (महाराष्ट्र और आँध्रप्रदेश) में आत्महत्याएँ अधिक हो रही है अथवा जो (केरल) आयात उदारीकरण द्वारा प्रभावित है, में यद्यपि ऋणबद्धता औसत से अधिक है, तो भी यह पाँचवे से अधिक नहीं है (द हिंदु, 8 नवंबर, 2006)। इस त्रासदी का मानवीय आयाम अभी भी काफी मार्मिक है तथा भारतीय कृषि का संकट तथा ऊपर रेखित विविध संबंधित संकट आसान तथा शीर्ध समाधन किए जाने के लिए अत्याधिक अस्थायी हैं। अल्पावधि तथा दीर्घावधि उपायों के रूप में समाधान के लिए अकेले कृषि संकट को ही, कृषि संकट तथा कृषि विकास संकट में विच्छेदित करने की आवश्यकता है। ( डी0 नरसिम्हा रेड्डी तथा स्रिजित मिश्रा, भारत में कृषि संकट, नई दिल्लीः ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय प्रेस, 2010)।

प्रतियोगी इन सभी कारकों का एक विस्तृत सर्वेक्षण प्रस्तुत कर सकता है अथवा किसी विशिष्ट क्षेत्र की समस्याओं को उजागर करने के लिए चुन सकता है।

ये लचीले दिशा निर्देश हैं, समावेश्य की अपेक्षा निदर्शी है। प्रतियोगी किसी भी प्रकार इनसे दृढ़बद्ध नहीं है।

निबंध प्रतियोगी के व्यक्तिगत शोध अथवा अनुभव पर आधारित तथा मौलिक सोच एवं विद्वता दर्शाने वाला और साथ ही विषय के आलोचनात्मक विश्लेषण से युक्त होना चाहिये। व्यापक सामान्यीकण से बचना चाहिए।

निबंध हिंदी अथवा अंग्रेजी भाषा में होना चाहिए। निबंध लगभग 5000 शब्दों का होना चाहिए। प्रतियोगी को निबंध में प्रयुक्त शब्दों की कुल संख्या बतानी होगी अन्यथा निबंध स्वीकार नहीं किया जाएगा। 5500 से अधिक शब्दों वाला निबंध स्वीकार नहीं किया जाएगा। निबंध पृष्ठ के केवल एक ही तरफ दोहरे स्थान के साथ साफ–साफ टाईप किया हुआ होना चाहिए। जिन प्रविष्टियों में इस निर्धारित मानदंड का अनुपालन नहीं किया जायेगा उन्हें अस्वीकृत किया जा सकता है। कल्पित नाम के साथ निबंध की तीन प्रतियां जमा की जानी चाहिए। प्रतियोगी का पूरा असली नाम तथा पता एक अलग कागज़ पर दिया जाना चाहिए और यह कागज एक सीलबंद लिफाफे में रखा होना चाहिए जिस पर ऊपर कल्पित नाम के साथ ही निम्न शब्द अंकित होने चाहिए।

वार्षिक निबंध पुरस्कार प्रतियोगिता–2016
भारतीय लोक प्रशासन संस्थान
नई दिल्ली।

सभी निबंध पंजीकृत डाक द्वारा निदेशक, भारतीय लोक प्रशासन संस्थान, इन्द्रप्रस्थ एस्टेट, रिंग रोड़, नई दिल्ली–110002 को भेजे जाने चाहिए। ये निबंध 31 अगस्त, 2016 तक अवश्य

प्राप्त हो जाने चाहिए। लिफाफे के ऊपर "वार्षिक निबंध पुरस्कार प्रतियोगिता–2016" लिखा होना चाहिए। निर्धारित तिथि के बाद प्राप्त प्रविष्टियों पर विचार नहीं किया जायेगा।

निर्णायक गण इन निबंधों पर अपना निर्णय देंगे और इनके द्वारा दिया गया पुरस्कार अंतिम होगा। यदि प्राप्त निबंधों में से कोई भी आवश्यक मानक स्तर तक नहीं पहुंचता है तो संस्थान को यह अधिकार है कि वह किसी को भी पुरस्कार न दे। पुरस्कृत निबंध भारतीय लोक प्रशासन संस्थान तथा लेखक की संयुक्त बौद्धिक संपत्ति होंगे।

कृपया ध्यान दें: अन्य किसी भी प्रकार के स्पष्टीकरण के इच्छुक प्रतियोगी निदेशक, भारतीय लोक प्रशासन संस्थान, इन्द्रप्रस्थ एस्टेट, रिंग रोड़, नई दिल्ली–110002 को लिख सकते हैं।

**Indian Institute of Public Administration**
**New Delhi**

**Annual Decision Making/Teaching Case Study Competition – 2016**

The objective of IIPA's Case Study Programme is to build a body of knowledge in governance through case studies with a view to promote a deeper and wider understanding of the functioning of Indian Administration in its specific environmental and institutional framework and also to broaden our knowledge and understanding of global and national best practices. In order to develop relevant case studies for use in the learning process, IIPA has renamed its annual case study competition as the Annual Decision Making/Teaching Case Study Competition.

A case study submitted for this competition should aim to facilitate the development of conceptual, behavioural and analytical skills, highlight areas for reform and promote sensitivity towards important issues, problems and challenges of public administration and governance.

The Case study may cover one or more of the following facets of public administration and governance:

i. Public policy issues and processes: conceptualization; planning; implementation; monitoring; evaluation and review of plans; programmes; schemes and projects with special reference to a specific State;

ii. Rural Development, Urban Development, Area based development policies, programmes, projects and schemes such as MNREGA, Consumer Awareness, Gender Sensitization, Social Empowerment and Social Inclusion, e-Governance, Human Rights, Elections and Electoral reforms; Law & Order; Government to Citizen and Citizen to Government interaction; Swachh Bharat and

iii. Service sectors including physical, social and economic infrastructure development, social services, voluntary organizations, cooperatives, non-governmental organizations (NGOs) and Public Private Partnership (PPP).

**The case study must be in two parts.**

Part I is to comprise 5-10 A4 size pages typed in double space using size 12 of Times New Roman font and keeping one and half inches margin on each side of the page. **It should consist of a description of an official organizational context concluding with an important decision to be made**. The following information could be provided: the decision to be made – what, why and who has to make it; a brief history of the organization, its vision/mission/values, goals/objectives; the present scenario; key strengths and weaknesses of the organization; challenges, threats and opportunities; influential personalities/groups relevant to the focal decision – their feelings/views (given in quotations) as obtained through interviews or accurately paraphrased; socio-political, economic, technological and cultural pressures; group and personality factors - values, attitudes, needs and expectations; skills; organizational reward systems; behaviour modeling and example setting by the organization's leadership and other factors relevant to the focal decision; visualized options/alternatives that seem to be available and their immediate, short, medium and long term consequences- the pros and cons thereof. Finally, instead of merely calling this part of the case study as Part I, it should be given a title based upon either one of the following:-

(i) focal organization / department / division / unit/section, programme / project /, scheme;

(ii) focal decision to be made.

Part II is to comprise 1 – 3 A4 size page(s) typed in double space using size 12 of Times New Roman font and keeping one and a half inches margin on each side of the page. **It should consist of the case writer(s) perceptions of what actually happened** – the decision that was actually made, why, with what expectations, the actual consequences that occurred and any views that the case writer wished to share *vis-à-vis* the case and the important learning – problems/concepts/insights and or skills – that the case may be utilized for imparting in the teaching/training process. Finally, instead of calling this part of the case study as part II, it should be entitled: ***Perceptions of the Case Writer (s).***

An executive summary of the case study is to comprise 1 – 2 A 4 size page(s) and typed in the same way as Parts I and II mentioned earlier. Three copies each of the case study (i.e., Parts I and II) and the executive summary are to be submitted.

Each case study should be accompanied by the following information: title of the case study; name of the case writer (s); address and telephone(s) of the Case Writer(s) and fax/email where available. The case writer(s) should also state whether the case study has been approved for publication by the concerned organization or whether approval is yet to be taken; and, finally, the signature(s) of the case writer(s).

The competition has a first prize of Rs.10,000, a second prize of Rs. 6,000 and a third prize of Rs. 4,000/-. Excluding the award winning case studies, any other case studies that are considered suitable f

Phone: 23468300
Fax: 2370 2440
directoriipa9@gmail.com

**INDIAN INSTITUTE OF PUBLIC ADMINISTRATION**
**INDRAPRASTHA ESTATE, RING ROAD,**
**NEW DELHI.**

## ANNUAL ESSAY PRIZE COMPETITION-2016

Entries are invited for the Annual Essay Prize Competition-2016. The value of the prize for the competition will be as under:

| | |
|---|---|
| First Prize | Rs.10,000/- |
| Second Prize | Rs.7,000/- |
| Third Prize | Rs.5,000/- |

Any competitor who has got a prize on one occasion will not, on any subsequent occasion, be eligible for an equivalent or lower prize. The joint authorship of essays shall not be allowed and any essay under joint authorship shall not be considered for competition.

The topics for the competition are

(i) Decentralization and Public Service Delivery
(ii) The Sustainable Development Goals (SDGs) adopted by UN General Assembly in September 2015
(iii) The Agrarian Crises

The essay writers are expected to cover the following aspects in their respective entries:

**Topic : Decentralization and Public Service Delivery**

Properly designed and implemented decentralization may effectively address the service delivery needs of local communities by more accurately reflecting local priorities for services and preferences for delivery systems and content. The design of administrative decentralization in India hinges on the "three Fs": funds, functions, and functionaries. India's experience with decentralization can be characterized as unbalanced, with political decentralization (Panchayat elections) running ahead of administrative decentralization. Functions have been devolved but PRIs have little control over funds (which come to PRIs tied to specific items) or functionaries (who remain appendages of the state government). This limited and unbalanced decentralization is unlikely to improve services, significantly because it does not improve the delegation, financing, information, and enforcing elements of system accountability— and in some ways could make them weaker.

The 73rd and 74th amendments to the Indian Constitution, provide the legal framework for decentralization. The amendments mandated state governments to transfer some powers and responsibilities to Panchayats at the rural level and to urban local bodies (ULBs) so they could function as autonomous institutions of self-government. The amendments also provided for regular elections to these local bodies and reserved one-third of the seats for women and a proportional number for Scheduled Castes/Scheduled Tribes (SC/ST) populations. Elections have been held in most states, resulting in the inclusion of more than three million people in the formal political system. However, few states have moved much beyond political decentralization to devolve funds, functions, and functionaries to local governments.

A well-designed decentralized system of governance requires that functions are clearly delegated to individual activities consistent with a budgeting system; finances follow functions; performance is judged through well-designed monitoring and evaluation mechanisms and information flows down to citizens; and citizens can enforce accountability both with policymakers and between policymakers and providers .

The strength of decentralization through PRIs lies in the fact that they are the legally grounded representative institution at the grassroots. However, in the absence of effective checks and balances, these institutions are susceptible to elite capture, political exclusion, and corruption. The user group approach is advantageous because it encourages an inclusive decision-making process at the local level by directly targeting the poor.

**Topic: The Sustainable Development Goals (SDGs) adopted by UN General Assembly in September 2015**

The concept of the SDGs was born at the United Nations Conference on Sustainable Development, Rio+20, in 2012. The objective was to produce a set of universally applicable goals that balances the three dimensions of sustainable development: environmental, social, and economic. The SDGs replace the Millennium Development Goals (MDGs), which in September 2000 rallied the world around a common 15-year agenda to tackle the indignity of poverty.17 Sustainable Development Goals (SDGs) of the 2030 Agenda for Sustainable Development adopted by world leaders in September 2015 at a historic UN Summit — officially came into force on 1st January 2016. Over the next fifteen years, with these new goals that universally apply to all, countries will mobilize efforts to end all forms of poverty, fight inequalities and tackle climate change, ensuring that no one is left behind.

The SDGs build on the success of the Millennium Development Goals (MDGs) and aim to go further to end all forms of poverty. The new goals are unique in that they call for action by all countries, poor, rich and middle-income to promote prosperity while protecting the planet. While the SDGs are not legally binding, governments are expected to take ownership and establish national frameworks for the achievement of the seventeen goals. Countries have the primary responsibility

for follow-up and review of the progress made in implementing the goals, which will require quality, accessible and timely data collection. Regional follow-up and review will be based on national-level analyses and contribute to follow-up and review at the global level.

In this context, the proposed theme of the essay may emphasise upon the niche area and may facilitate the solutions to specific issues such as; India's framework of action plan with respect to the SDGs, What would be India's strategy to achieve the global goals of action on climate change and the environment, improved access to health and education? What support should be extended to government to reflect the new global agenda in national development plans and policies? How would the challenges of financial resources meet the global development challenges? What would be the national indicators for the framed SDGs? How adequate and reliable is the existing data to frame a policy on the related issues. What are the challenges as a nation to meet the SDGs in the present context?

Essay should be original and creative in content selection and presentation. The effectiveness and clarity in communicating ideas should be an integral part of the essay.

**Topic: <u>The Agrarian Crises</u>**

Agrarian crisis presently raging in India is a cumulation of a series of a series of crises: agrarian, economic, technological, environmental, and ecological. As an agrarian crisis, it reflects the nonviability of increasingly fragmented small landholdings that are unable to sustain even subsistent farming. As an economic crisis, it draws attention to macro and micro factors adversely affecting agriculture from the neoliberal economic reforms accelerated since 1991. As a technological crisis, it indicates the endless and still unsettled debate and policy ambivalence around the issue of the use of genetically modified seeds among the Union and State governments. As an environmental crisis it refers to the fact that heavy uses of chemical fertilizers and multi-cropping have made the land overtly saline, hard, deficient in soil organic carbon (SOC), fatigued, weedy, and resistant to pest-control. As an ecological crisis, it is marked by symptoms of loss of biodiversity, percolation of chemicals used in farming to ground waters and their contamination, the going down and drying up of underground water tables due to lack of water-harvesting systems and pulling up of water for our use from 300 to 400ft. depth which was 40 to 50ft earlier. It ultimately merges with global warming and climate change threatening the very survival of species on the planet earth, much like the spectre, of nuclear holocaust. For example, many thriving ancient agrarian and urban civilizations in the world were destroyed by gradual loss of forest cover and creeping desertification or by decimation of ice caps and glaciers and all-enveloping inundation.

The colonial era in India was afflicted by frequent famines and appointment of Royal Famine Commissions to remedially deal with them. The colonial state was primarily an extractive instrument and only incidentally developmental to subserve

its own imperial interests. The growth rate in food production between 1900-1947 was barely 0.1 per cent. The notable achievements of post-Independence India were the Green Revolution and the White Revolution. The annual food grains production growth rate in 1950-20121 was 3.2 per cent. Not a big deal, but India grew from 'ship-to-mouth' imports to being not only self-sufficient but also an exporter.

The turn of the century witnessed a slow-down in agricultural growth and in fact decline. It did not happen overnight. A sharp fall in agricultural growth rate is evident in the figure of 3.3 per cent during 1950-51/1964-65 and a mere 0.6 per cent during 1994-95/2004-05. The result is that 40 per cent of those who live in and on the farm sector want to quit farming, given the availability of option. Even more grim is the tragic high incidence of suicides of farmers in sizeable parts of the country. It is supposed to be caused by 'unbearable burden of debt and increased competition from the 'imports' following economic liberlisation. This policy shift from Indian socialism to business liberalism is also accompanied by growing economic disparities between agricultural and urban sectors of the economy and class and regional disparities in general.

The phenomenon of agrarian crisis must, however, be closely examined in a nuanced way. As A. Vaidyanathan aptly remarks, the farm suicides are not occurring everywhere nor is its cause equally intense in the totality of the economic indicators. 'In 2002, less than 30 per cent of rural households in the country had outstanding debt and this constituted barely 2-3 per cent of the total value of assets held by them. The incidence of indebtedness in the states where suicides are high (Maharashtra and Andhra Pradesh) or have been affected by import liberlisation (Kerala) though higher than average is still no more than a fifth' (The Hindu, November 8, 2006). The human dimension of the tragedy is still quite poignant and the crisis of the Indian agriculture and the related multiple crises sketched above appear to be too sticky to be amenable to an easy and speedy solution. Even the agricultural crisis alone needs to be dissected into *agrarian crisis* and *agricultural development* crisis for addressing in terms of short-term and long-term measures (D. Narasimha Reddy and Srijit Mishra, *Agrarian Crisis in India*, New Delhi: Oxford University Press, 2010).

A competitor may attempt a comprehensive survey of all these factors or may opt for focusing only on problems of a specific sector.

These are flexible guidelines, illustrative rather than comprehensive. The competitors may not feel in any way rigidly bound by these guidelines.

Essay should be based on personal research or experience of the competitors and show evidence of original thinking and scholarship as well as a critical analysis of the subject. Broad generalizations should be avoided.

**The essay should be in English or Hindi. The length of an essay should approximately be 5000 words. Essay exceeding 5500 words shall not be accepted. The contestants must indicate the total number of words of the essay, failing which it will not be accepted. All essays must be typed in double space on one side of the paper only and those entries which do not adhere to the stipulation may be rejected. It should be submitted in triplicate under a "nom-de-plume" or "alias." The full name and address of the competitor should be given on a separate sheet and enclosed in a sealed envelope bearing the nom-de-plume on the outer cover with the following inscription.**

**Annual Essay Prize Competition-2016, Indian Institute of Public Administration, New Delhi.**

All essays should be sent to the Director, Indian Institute of Public Administration, Indraprastha Estate, Ring Road, New Delhi-110002, by Registered Post, so as to reach him not later than ***August 31, 2016.*** The envelope should be marked "Annual Essay Prize Competition 2016". The entries received after the due date may not be entertained.

The essays will be adjudged by a body of judges and the award of the judges shall be final. The institute reserves the right not to make any award if none of the essays submitted meets the necessary standard. Any essay which receives an award shall become the joint intellectual property of the author and IIPA.

---

**N.B.: Intending competitors who wish to seek any further clarification may write to The Director, Indian Institute of Public Administration, Indraprastha Estate, Ring Road, New Delhi-110002.**